प्र स्ता व ना

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में डॉ.प्रभाकर माचवे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के रूप में परिचित हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में आपने विपुल लेखन किया है। आपने किसी वाद-विशेष के पदाधर न रहते हुए साहित्य की सेवा में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आपका अपना एक विशिष्ट धरातल है, जिसके जुड़ कर आपने हिन्दी साहित्य में प्रयोगधर्मिता के विभिन्न आयामों का उद्घाटन किया। उपन्यास के क्षेत्र में भी आपने प्रयोगशीलता का परिचय दिया है।

एम.ए.की पढाई के दौरान सन १९८६ में मेरी भेंट श्रद्धेय डा.माचवे जी से हुई। तभी मैं आपके बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित हुई और मन में निश्चय कर लिया कि आपके उपन्यास साहित्य का अध्ययन मैं कर लूँ। इस दिशा में अन्य कोई प्रयास नहीं हुआ था। इसप्रकार जब एम.फिल्.में विषय-चुनाव का अवसर आया तो अनायास ही मेरे सामने माचवे जी साकार हो उठे।

नारी के चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करने की जिज्ञासा मन में थी। अत: मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध का शीर्षक चुना,`प्रभाकर माचवे जी के उपन्यासों की नायिकाएँ - एक अनुशीलन`। मैंने इस विषय का प्रस्ताव अपने निर्देशक परम आदरणीय गुरुवर्य डॉ.व्ही.के. मोरे जी के सम्मुख रखा, तो आपने तुरंत हामी भर दी।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के अध्ययन की सीमा को निर्धारित करते हुए मैंने माचवे जी के १९५२ से १९७८ तक लिखे -`द्वाभा`,`एकतारा`,`दर्द के पैबन्द`,`लक्ष्मीबेन`,`कहाँ से कहाँ` आदि पाँच नायिका-प्रधान उपन्यासों का अनुशीलन करना उचित समझा है। इस प्रकार मैंने प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में माचवे जी के विवेच्य उपन्यासों की नायिकाओं के विशेष अध्ययन के संदर्भ में किया है। प्रबन्ध के प्रारंभ में कुछ सवाल मन में उभर उठे थे, जो इस प्रकार हैं --

(१) माचवे जीकेविवेच्य उपन्यासों में नायिकाओं के चरित्र-चित्रण की व्याप्ति क्या है ?

(२) प्रस्तुत नायिकाओं के माध्यम से माचवे जी ने कौनसी समस्याओं का चित्रण किया है ?

(३) क्या ये नायिकाएँ अपनी ही समस्याओं में उलझी हुई हैं ?

(४) क्या इन नायिकाओं के चरित्र-चित्रण में विकास का कोई क्रम दिखाई देता है ?

नायिकाओं के अनुशीलन के दौरान मैंने उपरोक्त सवालों का हल ढूँढने का प्रयास किया है।

मैंने अपना लघु शोध प्रबन्ध निम्न पांच अध्यायों में प्रस्तुत किया है --

प्रथम अध्याय में माचवे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया है। सर्जक और उसकी कृतियों में बहुत गहरा परस्पर सम्बन्ध रहता है। अत: कृतिकार के व्यक्तित्व का अध्ययन करना आवश्यक रहता है। माचवे जी के व्यक्तित्व गठन में आपके परिवार-जनों के योगदान का अनुशीलन किया है। साथ ही आपके बहुमुखी साहित्य का संक्षेप में परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में माचवे जी के प्रमुख नायिकाप्रधान उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दिया है। नायिकाओं के चरित्र के अध्ययन की दृष्टि से संक्षेप में कथावस्तु देना उचित समझकर यह परिचय दिया है।

तृतीय अध्याय में माचवे जी के प्रमुख नायिकाप्रधान उपन्यासों की नायिकाओं का चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अनुशीलन किया है। इसमें नायिकाओं के चरित्र के विभिन्न पहलू उजागर करने की कोशिश की है।

चतुर्थ अध्याय में इन नायिकाओं के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का तथा उसके कारणों का विस्तार से विवेचन किया है। माचवे जी ने मनोविश्लेषणात्मक शैली को अपनाते हुए इन नायिकाओं के चरित्र-चित्रण के लिए मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का उपयोग किया है।

इस प्रकार नायिकाओं का अनुशीलन करने के पश्चात जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे मैंने उपसंहार में प्रस्तुत किए हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों एवं आत्मीय जनों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझती हूँ।

जिनका एक-एक लफ्ज भी मुझे अपने कर्तव्य-पथ पर आगे बढ़ने में प्रेरणादायी एवं स्फूर्तिदायी साबित हुआ है, वे मेरे निर्देशक परम आदरणीय गुरुवर्य डॉ.व्ही.के. मोरे जी का निर्देशन अनमोल है। आपने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अन्त तक अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। सातत्यपूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने इस लघु शोध-प्रबन्ध का प्रत्येक अध्याय देखा और मुझे निरन्तर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आपके इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है। आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं निरन्तर अभिलाषी रहूँगी।

आदरणीय डा.प्रभाकर माचवे जी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में है। मैंने आप ही से प्रस्तुत अनुसन्धान कार्य की मूल प्रेरणा पायी। आपके स्नेह एवं आशीर्वाद के बन्धन में बँधे रहने में ही मैं अपनी धन्यता तथा सौभाग्य मानूँगी।

श्रद्धेय डा.व्ही.व्ही.द्रविड, जिनकी निरन्तर प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मुझे लाभदायी साबित हुआ, उनकी मैं ऋणी रहूँगी।

प्रा.कणबरकर, प्रा.रजनी भागवत, प्रा.मुजावर, प्रा.वेदपाठक, प्रा.तिवले, प्रा.हिरेमठ जी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे परमपूज्य माता-पिता, जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कोई कार्य असंभव है, उनके शुभाशिष से ही मैं यह कार्य पूरा कर सकी। मैं निरन्तर उनके आशीर्वाद की छत्रछाया में रहने की कामना करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल के प्रति, विशेषत: ग्रंथपाल डा.जे.बी. जाधव जी ,असि.लायब्ररीयन श्री निशीकांत गुरव जी, तथा श्री. दिवठनकर जी की सहायता के प्रति मैं आभारी हूँ।

अंत में इस शोध प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत बालकृष्ण रा.सावंत जी ने बडी आत्मीयता से किया, इनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ।

विनीत

(कु. बिजली दडप)

शोध-छात्रा

कोल्हापुर।

दिनांक :३१:५:१९९०।

••